::*:: प्र मा ण प त्र ::*::

डॉ॰ इरेश सदाशिव स्वामी
एम॰ ए॰ पीएच्॰ डी॰
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक,
संगमेश्वर महाविद्यालय,
सोलापुर । एवं
शोध निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर ।

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, अनिल मारुती साळुंखे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰ फिल॰ [हिन्दी] उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु - शोध - प्रबंध " मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं का अध्ययन " मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक एवं परिश्रम के साथ पूरा किया है । उक्त छात्र के शोध कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ ।

शोध निर्देशक
20.4.94
[डॉ॰ आय॰ एस॰ स्वामी]

सोलापुर :

दिनांक : २०मई १९९४

** प्राक्कथन **

आधुनिक युग के नये कहानीकारों में मोहन राकेशजी का विशेष स्थान है। उनका साहित्य प्रामाणिकता की सहज अभिव्यक्ति है।

जब मैंने बी॰ए॰ में राकेशजी के "आषाढ का एक दिन" और "आधे-अधूरे" नाटक पढ़े तथा "परमात्मा का कुत्ता" और "आर्द्रा" जैसी महत्वपूर्ण कहानियाँ पढ़ी तब से मुझे राकेश के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान लेने की लालसा निर्माण हुई । उनके साहित्य ने मेरे मन में घर बना लिया। उनकी कुछ कहानियों ने मुझे बेहद प्रभावित किया। मैंने यह निश्चय किया कि राकेशजी की कहानियों का अध्ययन करना चाहिए। साथ साथ उनके व्यक्तित्व को जान लेने की जिज्ञासा निर्माण हुई ।

दूसरी तरफ मुझे इस लघु-शोध-प्रबंध के विषय चयन के पीछे प्रा॰ अशोक खोतजी तथा डॉ॰ अर्जुन चव्हाणजी की प्रेरणा आधारभूत रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का विषय है "मोहन राकेश की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याओं का अध्ययन"

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न थे -

१) मोहन राकेश का व्यक्तित्व किस प्रकार का था और उनका पूरा जीवन किस तरह बीता ?

२) उन्होंने अपने जीवन में किस प्रकार के साहित्य की निर्मिति की ?

३] कहानी-कला की दृष्टि से उनकी कहानियाँ कहाँ तक मेल खाती है ?

४] उनके कहानी साहित्य में कौन-कौन सी समस्याएँ उजागर हुई है ?

इन सभी सवालों के जवाब पाने की कोशिश प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में की है।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में मोहन राकेश के व्यक्तित्व का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। किसी भी साहित्यकार की कृति को पढ़ने से पहले उनके व्यक्तित्व पर एक नजर डालनी चाहिए। राकेशजी के व्यक्तित्व निर्माण में किन-किन का योगदान रहा इसका वर्णन इस अध्याय में किया है।

द्वितीय अध्याय में राकेश के रचना संसार का संक्षेप में विवरण दिया गया है। उनके उपन्यास, नाटक, कहानी और उनका अन्य प्रकाशित साहित्य इन सभी का मूल्यांकन किया गया है और उनकी विशेषताएँ संक्षेप में बतलाई गयी है।

तृतीय अध्याय में राकेश की कहानियों की कहानी कला की दृष्टि से समीक्षा की गयी है।

चतुर्थ अध्याय में राकेशजी की कहानियों में कौन-कौन-सी समस्याएँ उजागर हुई है इसका विवरण किया है। प्रस्तुत अध्याय इस लघु-शोध प्रबंध का महत्वपूर्ण अध्याय है।

पंचम अध्याय उपसंहार का है। यह इस पूरे लघु शोध प्रबंध का सारांश है। चार अध्यायों के अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष मिले उसका विवरण इस अध्याय में है।

प्रबंध के अंत में परिशिष्ट दिया गया है। इस में संदर्भ-ग्रंथ-सूची और सहाय्यक ग्रंथ सूची को क्रमबध्दता से दिया गया है । प्रत्येक संदर्भ ग्रंथ का प्रकाशक एवं संस्करण भी दिया गया है।

इस लघु-शोध प्रबंध की पुर्ति में मेरी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करने वाले हितचिंतको के प्रति कृतज्ञता भाव प्रकट करना मेरा आद्य कर्तव्य है।

यह लघु-शोध प्रबंध मेरे आदरणीय गुरुवर्य डॉ॰ इरेश सदाशिव स्वामीजी, "संगमेश्वर महाविद्यालय, सोलापुर" के निर्देशन में लिखा गया है। यदि आपका मार्गदर्शन न मिल पाता तो यह कार्य असंभव बन जाता था। आप के पास ज्ञान का सागर है। मैंने तो उस सागर में से कुछ ही बूंद को पा लिया है। सातत्य पूर्ण व्यस्तता के बावजूद आपने बार-बार प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मुझे अमोल सहाय्यता की इसलिए मैं आपका हमेशा-हमेशा के लिए ऋणी हूँ। आप के आत्मीय निर्देशन ने इस शोध कार्य के अंतर्गत आनेवाली कठिनाइयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया, तथा इस प्रबंध की एक-एक पंक्ति सूक्ष्मता से देखने का कार्य किया। यदि आप बार-बार मुझे सजग न करते तो शायद यह लघु शोध प्रबंध अधूरा रह जाता। आप के शांत, स्नेहलभाव, आत्मीयता, स्नेहपूर्ण भावना एवं योग्य पथ प्रदर्शन के लिए मैं अतीव कृतज्ञ हूँ ।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ॰ वसंत मोरे, डॉ॰ अर्जुन चव्हाण, डॉ॰ बी॰बी॰ पाटील, डॉ॰ के॰पी॰ शाहा, प्रा॰ आय॰एम॰ मुजावर तथा प्रा॰ सौ॰ एम॰एस॰ जाधवजी का सहयोग तथा आशीर्वाद मेरे साथ रहा । उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ ।

शिवाजी विश्वविद्यालय का बॅ. खर्डेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल तथा अन्य ग्रंथालय में कार्य करनेवाले लोगों ने मेरी सहायता की इसलिए मैं उनका आभार प्रकट करता हूँ ।

संगमेश्वर महाविद्यालय के ग्रंथालय से अनेक किताबों की सहायता मिली । इसलिए प्राचार्य तथा ग्रंथालय के ग्रंथपाल के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ ।

दादा-दादी माँ, माता-पिता, भाई-बहन तथा मित्रों की सहाय्यता तथा शुभकामनाएँ हमेशा मेरे साथ रही इसलिए मैं उनका हमेशा-हमेशा के लिए ऋणी हूँ ।

मेरे सहपाठी तथा परममित्र प्रा. प्रकाश चिकुर्डेकर, प्रा. सुनिलकुमार वाघमोडे तथा प्रा. नंदकुमार टोणपेजी ने मुझे बार-बार प्रोत्साहित एवं उत्साहित किया इसलिए मैं उनका आभारी हूँ । मेरे अन्य हितचिंतक मित्रों का भी मैं आभारी हूँ ।

प्रबंध का टंकलेखन तथा उसे सर्वांग सुंदर बनानेवाले संजय उर्फ दत्तात्रय सोरेगांवकर इनका मैं आभारी हूँ ।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध प्रबंध अत्यन्त विनम्रता के साथ विद्वानों के सम्मुख अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

आपका कृपापार्थी,

शोध-छात्र

कोल्हापुर :

दिनांक : २० / ५ /१९९४

[साळुंखे ए. एम.]

00 *÷*÷*÷* 00

::*:: अ नु क्र म णि का =::*::

** अध्याय प्रथम : पृ॰ 1 से 22

"मोहन राकेश के व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय ।"

** अध्याय द्वितीय : पृ॰ 23 से 40

" मोहन राकेश के समग्र साहित्य का परिचय ।"

** अध्याय तृतीय : पृ॰ 41 से 69

" मोहन राकेश के कहानी साहित्य की समीक्षा ।"

** अध्याय चतुर्थ : पृ॰ 70 से 119

" मोहन राकेश की कहानियों में वर्णित समस्याएँ : विशेष रुप से सामाजिक समस्याएँ ।"

** अध्याय पंचम : पृ॰ 120 से 128

" उपसंहार "

** परिशिष्ट : पृ॰ 129 से 131

१] संदर्भ ग्रंथ सूची
२] सहायक ग्रंथ सूची